42

देखो, सुनो, और समझो

(13:1-10)

अध्याय 13 का मुख्य उद्देश्य दो पशुओं अर्थात समुद्र में से निकलते पशु और पृथ्वी पर के पशु से परिचित कराना है। दोनों ही अजगर से सम्बन्धित हैं, जिन्हें 12:9 में स्पष्ट रूप से शैतान दिखाया गया था। अठारह में से पन्द्रह आयतें इन पशुओं की विनाशकारी शक्ति और खतरनाक उद्देश्य पर ध्यान दिलाती हैं, यह भाग भयभीत करने वाला प्रतीत होता है। आरम्भिक मसीहियों की (और हमारी) सहायता के लिए परमेश्वर ने अपने लोगों को समझ देने और अपने परिप्रेक्ष्य से विश्वास में बने रहने में सहायता के लिए प्रत्येक पशु को दिखाने के बाद एक टिप्पणी जोड़ी (13:9, 10, 18)।

पहले पशु के परिचय के बाद हम पढ़ते हैं, ''जिस के कान हों, वह सुने'' (आयत 9)। अध्याय 2 और 3 के बाद से हमने यह ताड़ना नहीं सुनी है, जहां यीशु ने सात कलीसियाओं के नाम प्रत्येक पत्र के अन्त में यह ताड़ना दी थी। यह ध्यान से सुनने, परखने और समझने की अपील है।

जैसे सांसारिक शिक्षा में ''तीन R'' महत्वपूर्ण हैं,[1] वैसे ही प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करने के लिए ''तीन L'' का महत्व है: ''Look,'' ''listen'' और ''learn'' संकेतवाद को *देखें,* गुप्त संदेशों को *सुनें* और परमेश्वर की शिक्षाओं को *समझें।* अध्याय 13 की पहली आयतों पर विचार करते हुए, यह जानने के लिए कि परमेश्वर आपको क्या सिखाना चाहता है ''तीन L'' ध्यान में रखें।

पाठ एक: शैतान मनुष्यों का इस्तेमाल करता है

अध्याय 12 में कहा गया है कि अजगर का इरादा ''[स्त्री] की शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने'' का था (आयत 17)। अध्याय 13 में विस्तार से बताया गया है कि इसके लिए उसने *कैसे* योजना बनाई: उसने इसे उसके उद्देश्य के लिए मिलावट करने वाली शक्तियों के द्वारा किया था।

इस पाठ में हम 1 से 10 आयतों का अध्ययन करेंगे और उनमें से पहली शक्ति अर्थात समुद्र से निकलने वाले पशु के बारे में जानेंगे। अगले पाठ में हम 11 से 18 आयतों पर

ध्यान केन्द्रित करेंगे, जहां हम दूसरी शक्ति अर्थात पृथ्वी के पशु से मिलेंगे। परन्तु अपना ध्यान पशुओं पर लगाने से पहले मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि शैतान अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सचमुच उन शक्तियों का इस्तेमाल करता है। विशेषकर वह मानवीय शक्तियों का इस्तेमाल करता है।

अगले पाठ में हम उन आयतों को, जिन्हें टीकाकार प्रकाशितवाक्य की सबसे जटिल आयतें कहते हैं अर्थात ''छह सौ छियासठ'' के जटिल हवाले वाली 13:18 देखेंगे। जिस बात को पाठक नज़रअन्दाज करते प्रतीत होते हैं, वह यह है कि लेखक ने कहा कि ''वह *मनुष्य* का अंक है।'' यह पशु का अंक नहीं है; सींगों और पूंछ वाले लाल तंग कपड़े पहने दुष्ट आत्मा का अंक नहीं है; यह अलौकिक मनुष्य का अंक भी नहीं है; बल्कि यह ''मनुष्य का'' अंक है। यूनानी भाषा में (''a'' या ''an'') जैसा कोई उप पद नहीं है इसलिए इस पद को ''मनुष्यजाति'' या ''मनुष्य का अंक'' पढ़ा जा सकता है।

अध्याय 13 के अपने अध्ययन में हम शैतान को *मानवीय* जीवों के माध्यम से काम करते देखेंगे।[2] यूहन्ना के समय में, उसने मसीही लोगों पर रोमी अधिकारियों के माध्यम से प्रहार किया। आज वह और उसके दुष्ट सहायक हम पर उन लोगों के द्वारा आक्रमण करते हैं, जिनसे हम रोज़ मिलते हैं। यीशु ने अपने चेलों को बाहर भेजते हुए उन्हें शैतान की परवाह करने के लिए नहीं, बल्कि ''लोगों से सावधान'' रहने को कहा था (मत्ती 10:17)।

''जिस के कान हों वह सुने'' (13:9)।

पाठ दो: शैतान धमकी का इस्तेमाल करता है (13:1, 2)

दृश्य को अपने मन में बिठाएं: ''और वह[3] [यानी अजगर] समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ'' (12:1ख)। संदर्भ में समुद्र बहुत, बेचैन मानवता को कहा गया हो सकता है (आयत 1 की तुलना 17:1, 15 से करें; देखें यशायाह 60:5)। हम इसे ''दिसकू के हर ओर से, हवा में फुहार छोड़ती हुई तेज़ लहरों से गरजते समुद्र''[4] के रूप में देखेंगे; हमें ''जंगली तत्वों की रूखी गरजन'' सुनाई देनी चाहिए।

यूहन्ना के देखते-देखते लहरों से एक भयानक पशु निकला। झाग में से पहले तो उसका सिर निकला, और अन्त में शरीर:

> तब मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस राजमुकुट और उसके सिरों पर परमेश्वर की निन्दा के नाम लिखे हुए थे। जो पशु मैंने देखा, वह चीते की नाईं था; और उसके पांव भालू के से, और मुंह सिंह का सा था (आयतें 1ख, 2क)। ''समुद्र में से निकला पशु'' वाला चित्र देखें।

यह वही पशु है, जिसे हमने अध्याय 11 में संक्षेप में देखा था, वही भयानक पशु जिसने अथाह कुण्ड में से निकलकर दो गवाहों को मार डाला था (आयत 7)। अध्याय 13 वाले पशु को आगे फिर अथाह कुण्ड में से निकलते हुए दिखाया जाएगा (17:3, 7, 8)।

इस बात की परवाह न करें कि उस पशु को कभी तो अथाह कुण्ड में से निकलता दिखाया जाता है और कभी समुद्र से: (1) यूनानी भाषा के पुराने नियम में ''अथाह कुण्ड'' मुख्यतया समुद्र की गहराइयों के लिए इस्तेमाल किया जाता था।[5] (पुराने नियम में इसका अधिकतर अनुवाद ''गहरा'' हुआ है)। ''अथाह कुण्ड'' और ''समुद्र'' की अवधारणाओं में गहरा सम्बन्ध है। (2) आखिर यह केवल संकेतवाद है और संकेतवाद में तरलता होती ही है।

शेष पुस्तक में समुद्र से निकलने वाले पशु को केवल ''पशु'' के रूप में, जबकि उसके साथी को पृथ्वी के पशु के रूप में दिखाया गया है और उसे ''झूठा भविष्यवक्ता'' कहा गया है। देखें 16:13; 19:20; 20:10)। इसलिए कहीं-कहीं मैं इन्हीं पदनामों का इस्तेमाल करूंगा।

पशु का विवरण पढ़ते हुए, मुझे मेरी शैली के मृत देहों के कंकालों से बने प्रसिद्ध ''फ्रैंकस्टेन'स मोंस्टर''[6] का स्मरण आता है। प्रकाशितवाक्य 13 वाला पशु दानिय्येल भविष्यवक्ता के दर्शन में दिखाए गए चार पशुओं के अंगों को जोड़कर बनाया गया है (दानिय्येल 7:2-27)। नीचे उस दर्शन के दानिय्येल के विवरण से मुख्य बातें ली गई हैं:

> ... कि महासागर पर चौमुखी आंधी चलने लगी। तब समुद्र में से चार बड़े-बड़े जन्तु, जो एक-दूसरे से भिन्न थे, निकल आए। पहिला जन्तु सिंह के समान था ... फिर ... एक और जन्तु ... जो रीछ के समान था, इसके बाद मैं ने दृष्टि की और देखा कि चीते के समान एक और जन्तु है ... और उस जन्तु के चार सिर थे; और उसे अधिकार दिया गया। फिर इसके बाद ... देखा, कि एक चौथा जन्तु है, जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है; और उसके बड़े-बड़े लोहे के दांत हैं; वह सब कुछ खा डालता है और चूर-चूर करता है, और जो बच जाता है, उसे पैरों से रौंदता है और वह सब पहिले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके दस सींग हैं (दानिय्येल 7:2-7)।

दानिय्येल 7 अध्याय वाले चार पशुओं की विशेषताओं को प्रकाशितवाक्य 13 वाले समुद्र से निकलने वाले पशु से चतुराई से मिलाने के ढंग को देखें।

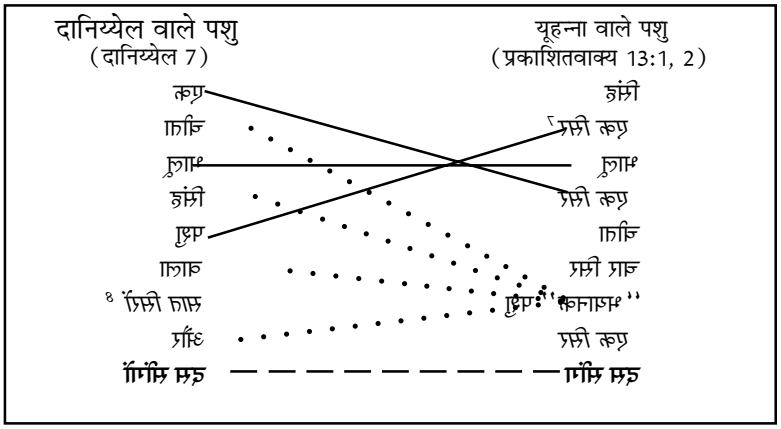

यह समझने के लिए कि यह पशु कौन या क्या है,[9] पहले यह समझना आवश्यक है कि दानिय्येल द्वारा देखे गए पशु किसे या क्या दिखाते थे। अधिकतर विद्वान इस बात से सहमत हैं कि दानिय्येल 7 में चार पशुओं वाला दर्शन दानिय्येल 2:31-45 और 8:3-25 वाले दर्शनों से सम्बन्धित है और चार पशु चार राज्यों को दर्शाते हैं:[10] पहला राज्य बाबुल का साम्राज्य था (606-538 ई.पू.) (2:37, 38)। दूसरा मादा फारस का साम्राज्य था (538-330 ई.पू.) (8:20) जबकि तीसरा यूनानी साम्राज्य था (330-63 ई.पू.) (8:21)। फिर चौथा राज्य रोमी साम्राज्य (63ई.पू.-476 ई.), यही वह राज्य है, जो 33 ई. में कलीसिया की स्थापना के समय अस्तित्व में था।[11]

दानिय्येल की पुस्तक राजा और राज्य में बहुत कम अन्तर करती है। उदाहरण के लिए दानिय्येल ने चार धातुओं वाली मूर्ति का दर्शन बताते हुए नबूकदनेस्सर राजा से कहा था कि ''यह सोने का सिर तू ही है। तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा; ...'' (दानिय्येल 2:38ख, 39)। इस पद में ''तू'' का अर्थ वास्तव में ''तेरा राज्य'' (अर्थात बाबुल का साम्राज्य) है; परन्तु राज्य का मुख्य आकर्षण राजा होने के कारण दानिय्येल ने व्यक्तिगत ''तू'' का इस्तेमाल करने में हिचकिचाहट नहीं की।

चार राज्यों की सूची पर फिर से ध्यान दें और पूछें कि उनमें सामान्य बात क्या थी। कई विशेषताएं बताई जा सकती हैं: सभी राज्य मज़बूत थे; सब ने दूसरों पर अधिकार करके विजय पाई थी; सब संसार भर में फैले हुए थे। परन्तु यूहन्ना के पाठकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह तथ्य होना था कि *सब ने परमेश्वर के लोगों को सताया था*। कुछ राज्य दूसरों से बुरे थे, परन्तु सब ने इस्राएलियों के साथ दासों वाला व्यवहार किया था। बेबिलोनियों ने यरूशलेम का विनाश किया था और यहूदियों को बंदी बनाया था। मादी और फारसियों द्वारा कब्जा किए जाने के समय इस्राएली एक अधीन जाति थे। यूनानी साम्राज्य में विशेषकर राज्य के सीरियाई भाग तथा अंतियोकुस एपिफेनस के समय यहूदियों का दमन चरम पर था। मक्काबियों के समय में कुछ राहत के बाद, इस्राएली एक बार फिर से दास बन गए, इस बार रोमियों के अधीन। चार राज्यों को ''परमेश्वर विरोधी राजनैतिक शक्ति'' नाम देना उपयुक्त है।

दानिय्येल द्वारा देखे गए चार पशुओं के सभी गुणों वाले पशु के बारे में पढ़कर पहली शताब्दी के पाठकों को क्या लगा होगा? एडी क्लोर ने कहा है, ''बहुत कम संदेह है कि यूहन्ना के समय में यह पशु कलीसिया का सताने वाला रोमी साम्राज्य ही था।''[12] जेम्स एफर्ड ने लिखा है, ''जिन लोगों के नाम मूल में यह पुस्तक लिखी गई, उनके लिए इस पशु की पहचान कोई रहस्य नहीं होगा। रोमी राज्य उनके विरुद्ध अपनी शक्ति इस्तेमाल कर रहा था।''[13]

अध्याय 13 वाले पशु को रोमी साम्राज्य के साथ मिलाने के ढेरों कारण हैं। उदाहरण के लिए अध्याय 17 में उस पशु को ''बड़ी वेश्या'' (आयतें 3, 7) द्वारा मुक्त कर दिया जाता है और उस स्त्री को ''वह बड़ा नगर, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज करता है'' (आयत 18) जो ''सात पहाड़ों'' पर बैठा है (आयत 9) अर्थात रोम नगर कहा गया है ।

पुन: पशु का विवरण उस बात से मेल खाता है, जिसे हम रोम और रोमियों के नाम से जानते हैं। एल्बर्ट बाल्डिंगर ने यह समीक्षा दी है:

यूहन्ना वाला समुद्र से निकला पशु रोमी साम्राज्य है। इसे आमने-सामने स्तम्भों में रखें और देखें कि किस प्रकार सांसारिक इतिहास हर बात में पवित्र लेख के साथ-साथ चलता है।

सांसारिक इतिहास कहता है कि रोम संसार की घमण्डी मल्लिका थी, जबकि यूहन्ना कहता है कि उस पशु को ''हर कुल और हर एक कुल और लोग और भाषा और जाति पर अधिकार दिया गया।'' यूहन्ना कहता है कि उस पशु ने ''परमेश्वर की निंदा करने के लिए मुंह खोला'' सांसारिक इतिहास के अनुसार सरकारी आदेश ''हमारा प्रभु और हमारा परमेश्वर ठहराता है'' जबकि परमेश्वर की निंदा करने वाले शीर्षक से सम्राट डोमिशियन के समय में जारी किए गए। यूहन्ना कहता है कि उस पशु को ''अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े और उन पर जय पाए'' इतिहास नीरो से लेकर डायोक्लेशियन तक बड़े दस सतावों में मसीही लोगों के भयंकर सताव की बात कहता है।[14]

''राजा = राज्य'' के समीकरण को ध्यान में रखते हुए कि पशु को सम्राट डोमिशियन का नाम भी दिया जा सकता है। जो पहली शताब्दी के अन्त में मसीही लोगों की समस्याओं का मूल स्रोत था। जैसे भी हो, यूहन्ना के समय में यह पशु ''मसीही-विरोधी राजनैतिक शक्ति'' था।

कुछ देर में हम इस पशु पर जो रोम ही था ध्यान देंगे; परन्तु मैं इस बात पर ज़ोर देने के लिए रुकता हूं कि अपनी सैनिक कार्रवाई के लिए भर्ती आरम्भ करते हुए इस अजगर ने सबसे पहले ज़बर्दस्त बल की भर्ती की, जिन्हें गुण्डे कहा जा सकता है। *शैतान* के पास तीन मुख्य ढंग हैं, जिनके द्वारा वह मसीहियत का विनाश करने का प्रयास करता है: *धमकी, धोखा, प्रलोभन।* इनमें सबसे पहला रोमी सरकार के दौरान अध्याय 13 में मिलता है।[15]

रोमी साम्राज्य कब का मिट चुका है। मुझे यूरोप के कई भागों में उस प्राचीन सभ्यता के खण्डहरों में घूमने का अवसर मिला है। उस राज्य की शान अब नहीं है; यह अब है ही नहीं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि अध्याय 13 की प्रासंगिकता आपके और मेरे लिए नहीं है। आयत 9 हमें बताती है कि यह उन सब के लिए, ''जिस के [भी] कान हों'' है। अपने काम को बढ़ाने के लिए शैतान द्वारा धमकी का इस्तेमाल उसके रोमी साम्राज्य को कम करके सीमित नहीं हुआ।[16] आज भी ऐसे कई देश हैं, जहां सरकार धार्मिक स्वतन्त्रता पर पाबंदी लगाती है। अन्यों में बेईमान रोज़गार देने वाले हैं, जो कर्मचारियों को गलत काम करने में उनका साथ न देने पर निकाल देते हैं। ऐसे भी हैं, जिनमें वे परिवार हैं, जो बाइबल को मानने वाली मसीहियत को मानने पर उन्हें छोड़ देने की धमकी देते हैं। *शैतान* के शस्त्रागार में धमकी आज भी एक महत्वपूर्ण हथियार है।

''जिसके कान हों वह सुने'' (13:9)।

पाठ तीन: शैतान बल का इस्तेमाल करता है (13:1, 2, 4, 7)

शैतान मसीही लोगों को कई ढंगों से धमकाने की कोशिश करता है। जैसा कि मैंने पहले ही कहा, उसका एक तरीका बल का इस्तेमाल है। पशु के विवरणों और उसकी बड़ी

शक्ति के संकेतों को फिर से देखें:

अजगर की तरह, उसके सात सिर, दस सींग और कई मुकुट हैं (13:1)।[17] आगे एक अध्याय में हम देखेंगे कि अजगर की तरह पशु का भी रंग लाल है (17:3)। जैसे मुझे और आपको परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है (उत्पत्ति 1:26), वैसे ही उस पशु को भी अपने सृजनहार के स्वरूप पर बनाया गया है। अजगर का अध्ययन करते हुए हमने सुझाव दिया था कि उसका लाल-सुरख रंग उसकी हिंसक प्रवृत्तियों की ओर संकेत करता है; उसके सात सिर, उसकी बड़ी शक्ति; और उसके कई मुकुट, उसके बड़े अधिकार को दिखाते हैं।[18] ये सब अब पशु को दे दिए गए थे। ''और उस अजगर ने अपनी सामर्थ, और अपना सिंहासन,[19] और बड़ा अधिकार, उसे दे दिया''[20] (आयत 2ख)। ''और उसे हर एक कुल, और लोग, और भाषा, और जाति[21] पर अधिकार दिया गया'' (आयत 7ख)। शैतान ने जो यीशु को देने की पेशकश की थी (मत्ती 4:8, 9), वह पशु को दे दिया गया।

इसके अलावा मिले-जुले पशुओं की विशेषताएं सामर्थ और शक्ति को भी दिखाती हैं: समुद्र से निकलने वाला पशु तेंदुए की तरह फुर्तीला,[22] भालू की तरह शक्तिशाली, शेर की तरह खूंखार और किसी भी जंगली पशु की तरह दुष्ट था।[23]

और तो और पशु की शक्ति उसकी दिखाई देने वाली अभेद्यता में दिखाई देती थी,[24] ''तलवार'' से ''गहरा घाव'' मिलने पर भी वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया, जिससे जन साधारण चकित रह गए (प्रकाशितवाक्य 13:3, 12, 14, 15)।

वास्तव में वह पशु परमेश्वर से भी मज़बूत लगा, क्योंकि ऐसा लगा कि वह बिना परिणाम भोगे परमेश्वर की निंदा कर सकता है: आयत 1 कहती है कि ''उसके सिरों पर[25] परमेश्वर की निंदा के नाम लिखे हुए थे।'' ''परमेश्वर की निंदा के नाम'' सम्भवतया रोमी हाकिमों द्वारा अपने नामों के साथ इस्तेमाल किए जाने वाले ईश्वरीय शीर्षक थे:

> हर सम्राट *divus* या *sebastos* कहलाता था, जिसका अर्थ है ''दैवीय।'' *परमेश्वर* या *परमेश्वर का पुत्र* नाम तो आम तौर पर सम्राटों के लिए इस्तेमाल किया जाता था; नीरो ने तो अपने सिक्कों पर अपने आपको *संसार का मुक्तिदाता* तक छपवा दिया था। ... इसके अलावा बाद के सम्राटों ने अपने नाम के साथ लातीनी शब्द *dominus* या इसका समानान्तर यूनानी शब्द *kurios* लगा लिया, जिन दोनों का अर्थ *प्रभु है* और पुराने नियम में इसे परमेश्वर के विशेष शीर्षक और नये नियम में यीशु मसीह के विशेष शीर्षक में दिया गया है।[26]

फिर, 13:5 कहता है कि पशु के मुंह से ''बड़े बोल और निंदा'' निकली। ''निंदा'' करने का अर्थ ''के विरुद्ध बोलना'' है। 13:6 में हमें पता चलता है कि पशु ने किसके विरुद्ध बोला: ''उसने परमेश्वर की निंदा करने के लिए मुंह खोला कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात[27] स्वर्ग के रहने वालों की निंदा करे।'' ''उसके तम्बू'' का अर्थ ''उसके निवास स्थान'' से लिया जा सकता है।[28] परमेश्वर अपने लोगों में वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16) और मसीही लोगों का स्वदेश स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20),

इसका अर्थ सम्भवतया कलीसिया के बारे में फैले झूठ से है।[29]

13:1-8 से यह प्रभाव छोड़ा गया कि पशु जो चाहे कर सकता है और उसे कोई रोक नहीं सकता। इस कारण उसने लोगों से कहा, ''... इस पशु के समान कौन है?'' (आयत 4ख)। स्पष्टतया कोई नहीं था, अदने मसीही तो बिल्कुल नहीं। ''और उसे यह अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े,[30] और उन पर जय पाए'' (आयत 7क)। ''जय पाए'' *nike* के क्रिया रूप से लिया गया है, जिसका अर्थ ''विजय'' है। पशु पहाड़ से आने वाले बड़े पत्थर के समान था, जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को सपाट कर देता है। वह अजेय लगता था।[31]

जैसा कि पहले ही कहा गया है कि शैतान जब भी मौका मिले अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बल का इस्तेमाल करता है। मैंने कई उदाहरण दिए हैं: बेशक आप और उदाहरण दे सकते हैं।[32] परन्तु अभी मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि ''जब शैतान आपको अपनी इच्छा से मिलाने के लिए *विवश* करने का प्रयास करे तो चकित न हों।''

''जिस के कान हों, वह सुने'' (13:9)।

पाठ चार: शैतान पूरे दबाव का इस्तेमाल करता है (13:3, 4, 8)

दबाव को रोकना कठिन है, चाहे दूसरे आपके साथ खड़े भी हों तब भी। भीड़ के आपके विरुद्ध होने पर यह और भी कठिन हो जाता है। एक बार यीशु ने कहा था कि बहुसंख्यक लोग ''चौड़े मार्ग'' पर जाते हैं ''जो विनाश को पहुंचाता है'' (मत्ती 7:13)। पवित्र शास्त्र के हमारे इस भाग में उसी बात की पुष्टि है: ''और *सारी पृथ्वी* के लोग उसके पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चले; ... पृथ्वी के वे *सब* रहने वाले, ... उस पशु की पूजा करेंगे।'' (आयतें 3ख-8क)

पशु की पूजा पर हम अगले पाठ में चर्चा करेंगे,[33] परन्तु अभी के लिए पूजा की सब बातों अर्थात लोगों के चकित होने, श्रद्धा, प्रशंसा और चापलूसी की बातों पर ध्यान दें। ''और यह कहकर पशु की पूजा की, कि इस पशु के समान कौन है?'' (आयत 4ख)। उनकी बातें ''इस बड़े प्रश्न की कि 'हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है?' की भौंडी नकल थी (निर्गमन 15:11)।''[34]

पशु असली धर्म की कई बार नकल करता है। उदाहरण के लिए ठीक हुए घाव का विवरण यीशु की मृत्यु और जी उठने का व्यंग्य चित्र है: ''और मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा, मानो वह मरने पर है;[35] फिर उसका प्राण घातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा ...'' (आयत 3) कर रहे थे। मूल भाषा में ''मानो वह मरने पर है'' वाक्यांश मेमने के नश्वर घाव के विवरण के लिए 5:6 और 13:8 जैसा ही है। अधिकतर टीकाकारों का मानना है कि किसी न किसी प्रकार 13:3 का सम्बन्ध पहली शताब्दी के अंधविश्वासी लोगों में पाई जाने वाली ''नीरो रैडिविवुस'' दंत कथा से है।[36] इस मिथक के अनुसार नीरो जो 68 ईस्वी में मर गया था, ने अपने विरुद्ध होने वाली रोमी सेना को दण्ड देने के लिए वापस आना था। कुछ लेखकों का मानना है कि यह पद डोमिशियन के लिए था, जो एक अर्थ में ''जी उठा'' नीरो ही था; रोमी इतिहासकार

टरटुलियन ने मसीही लोगों के डोमिशियन के सताव की बात करते हुए उसे ''क्रूरता में नीरो जैसा व्यक्ति'' कहा है।[37] दूसरी ओर इस पद का केवल यह अर्थ हो सकता है कि कई बार ऐसा लगा कि रोमी साम्राज्य मरने के किनारे है, परन्तु वह फिर से सामर्थी होकर पहले से भी शक्तिशाली हो जाता है।

हर बात का अर्थ समझ आए या न, परन्तु अन्तिम परिणाम देखना आसान है कि सारा संसार पशु पर हैरान था। उन्होंने उसकी पूजा की और उसके पीछे चले। मसीही लोगों के लिए जिन्होंने उसके आदेशों को ठुकराया था, यह कितना कठिन हो गया था!

क्या शैतान आज भी हमें अपनी इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश करने के लिए हम पर दबाव डालता है? आप जानते हैं कि वह दबाव डालता है। आज भी हम यह पुकार सुनते हैं ''सब लोग उसकी बात मान रहे हैं!'' हमें उन दो मार्गों के बारे में अपने आप को बार-बार याद दिलाना आवश्यक है और यह सच्चाई भी कि चौड़ा मार्ग ''विनाश को पहुंचाता है,'' जबकि थोड़े हैं, जो उस तंग मार्ग से जाते हैं ''जो जीवन को पहुंचाता है'' (मत्ती 7:13, 14)। हमें अपनी बाइबलों में निर्गमन 23:2क पर भी चिह्न लगा लेना चाहिए कि: ''बुराई करने के लिए न तो बहुतों के पीछे हो लेना।''

''जिस के कान हों, वह सुने'' (13:9)।

पाठ पांच: शैतान सीमित है (13:5, 7)

अभी तक बताई गई सच्चाइयां निराश करने वाली हो सकती हैं, परन्तु वचन में इस समाधान को न भूलें, जिससे हमें पता चलता है कि जो भी हो जाए, नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में ही है। एक हल तो यह वाक्यांश है ''कि उसे दिया गया'' या इसके जैसा ''उसे एक मुंह दिया गया'' (आयत 5क); ''और उसे ... अधिकार दिया गया'' (आयत 5ग); ''और उसे यह अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े'' (आयत 7क)। जैसा कि हमने इस शृंखला में पहले देखा है कि इस वाक्यांश का संकेत है कि किसी के पास भी चाहे वह परमेश्वर का शत्रु ही क्यों न हो, जो भी अधिकार है, वह इसलिए है कि परमेश्वर ने उसे वह अधिकार पाने की अनुमति दी है।[38]

एक और हल ''ब्यालीस महीने'' का अंक है (आयत 5ख)। अध्याय 11 से अब तक हमने इस सांकेतिक अंक के कई रूप देखे हैं (अन्तिम रूप यहां 13:5 में मिलता है)। अब तक आपको इसका अर्थ याद हो चुका होगा: यह ''$3^{1/2}$ वर्ष'' कहने का और गुप्त ढंग है, और ''$3^{1/2}$'' बेहतर कल की आशा के साथ परीक्षाओं और कष्ट का अंक है। पशु की गतिविधि पर लागू करने पर यह संकेत इस बात की घोषणा करता है कि परमेश्वर ने पशु को लोगों को कष्ट देने की अनुमति दी, परन्तु केवल सीमित रूप में और सीमित समय के लिए। रोम शक्तिशाली हो सकता है, परन्तु ''जाति-जाति पर राज'' परमेश्वर ही करता है; ''अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान'' परमेश्वर ही है (भजन संहिता 47:8)।

''जिस के कान हों, वह सुने'' (13: 9)।

पाठ छह: अन्त में, शैतान पराजित होगा (13:9, 10)

अभी तक हम 1 से 8 आयतों में कभी आगे और कभी पीछे आ-जा रहे थे, परन्तु अन्त में हम आयत 9 पर आते हैं: ''जिसके कान हों, वह सुने।'' प्रभु के पास हमारे लिए विशेष संदेश क्या है ? आयत 10 को ध्यान से सुनें: ''जिस को कैद में पड़ना है, वह कैद में पड़ेगा, जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से मारा जाएगा, पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है।''

आयत 10 का आरम्भ यिर्मयाह 15:2 की झलक देता है (यिर्मयाह 43:11 भी देखें), जब कि ''तलवार'' की बात हमें मत्ती 26:52 में पतरस से कहे यीशु के शब्द याद दिलाती है। इस वचन की कई व्याख्याएं हो सकती हैं।[39] (1) आयत में ''जो'' के दोनों हवाले मसीही लोगों के लिए हो सकते हैं। यदि वह व्याख्या सही है तो प्रभु मसीही लोगों को उसके लिए जो भविष्य में उनके लिए था समर्पण करने को कह रहा था,[40] न कि सताए जाने पर तलवार से अपना बचाव करने का प्रयास करने को।[41] (2) ''जो'' के दोनों संकेत उनके सताने वालों के लिए हो सकते हैं। यदि ऐसा है तो यह पद मसीही लोगों को आश्वस्त कर रहा है कि उनके शत्रुओं को दण्ड मिलेगा, यानी न्याय अवश्य होगा। (3) पहला ''जो'' मसीही लोगों के लिए हो सकता है, जबकि दूसरा ''जो'' उनके सताने वालों के लिए हो सकता है। यह दोनों विचारों को मिला देगा अर्थात यूहन्ना के पाठकों को बताया जा रहा था कि वे कष्ट सहने को तैयार रहें, परन्तु आश्वस्त रहें कि अन्त में उन्हें सताने वालों को वैसा ही मिलेगा, जैसे उन्होंने दिया था।

सभी व्याख्याएं प्रकाशितवाक्य के तुरन्त संदर्भ और सम्पूर्ण उद्देश्य से मेल खाती हैं। मुझे लगता है कि आयत 10क की पहली या दोनों बातें मसीही लोगों को सताने वालों के लिए होनी चाहिए: (1) यिर्मयाह द्वारा ऐसे ही शब्दों में परमेश्वर का विरोध करने वालों पर आरोप लगाया गया था। रॉबर्ट मुल्होलैंड ने पूछा था, ''विद्रोहियों के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द पवित्र लोगों के लिए कैसे हो सकता है ?''[42] (2) यहां यूनानी शब्द का अनुवाद ''तलवार'' रोमी सेना द्वारा इस्तेमाल की गई युद्ध की तलवार अर्थात अध्याय छह में दूसरे घुड़सवार को दी गई तलवार से मिलती-जुलती है।[43] (3) अगले अध्याय में इस बात को उनके शत्रुओं को दण्ड दिया जाएगा ''पवित्र लोगों का धीरज'' कहा गया है (14:11, 12)। (4) पाठकों के लिए यह बड़ा राहत देने वाला (मेरा मानना है) होगा, परन्तु शब्दों पर विचार करने से संकेत मिलता है कि *मसीही लोगों के ''दृढ़ और विश्वासी'' रहने तक दुष्ट की कोई शक्ति उन पर विजय नहीं पा सकती।*[44]

आयत 10 का मुख्य संदेश ''पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है'' शब्दों में मिलता है। इस पद से मसीही लोगों को अपने जीवनों और विश्वास में बने रहने का प्रोत्साहन मिलना चाहिए। द सिम्पल इंग्लिश™ बाइबल में है, ''इसका अर्थ है कि पवित्र लोग सहें और विश्वासी रहें।'' धीरज की आवश्यकता पशु के पीछे चलने के लिए नहीं, बल्कि मसीह के पीछे चलने के लिए है।

''जिस के कान हों, वह सुने'' (आयत 9)।

सारांश

पहले आयत 8 की बात करते हुए मैंने इसे पूरा नहीं दोहराया था। पूरी आयत इस प्रकार है, ''पृथ्वी के वे सब रहने वाले, जिनके नाम उस मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।'' सरदीस की कलीसिया के नाम पत्र का अध्ययन करते हुए हमने ''जीवन की पुस्तक'' के बारे में पढ़ा था (3:5); यह विश्वासी लोगों की पुस्तक है (देखें 20:15)।[45] इस वाक्यांश से सताए जा रहे मसीही लोगों को आश्वासन मिला कि परमेश्वर उन्हें भूलेगा नहीं।

मूल लेख में, ''जगत की उत्पत्ति से'' वाक्यांश ''हर कोई जिसका नाम लिखा नहीं गया है'' या ''मेमना जो घात किया गया था'' हो सकता है।[46] जैसे भी हो संदेश यह है कि मनुष्य के छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना अचानक आया विचार नहीं था; बल्कि यह ''परमेश्वर की दीर्घकालिक योजना'' थी।[47] यह तो मनुष्य को पृथ्वी पर लाने से पहले उसके मन में था।[48]

आयत 8 की शब्दावली को हर मसीही को विशेष समझना चाहिए, परन्तु मैं इस आयत को एक महत्वपूर्ण विचार पर प्रभाव देने के लिए इस्तेमाल करता हूं। पृथ्वी पर दो तरह के लोग हैं: वे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं और वे जिनके नाम नहीं लिखे गए।[49] संसार में लोगों को कई श्रेणियों अर्थात राष्ट्रीय, जातीय, सामाजिक, आर्थिक और ऐसी कई श्रेणियों में बांटा जाता है, परन्तु अन्त में महत्व उसी बात का है कि हमारा नाम जीवन की पुस्तक में लिखा गया है या नहीं।

यदि आपका नाम जीवन की उस पुस्तक में है तो आप इसे बुरे समय में भी बनाए रख सकते हैं। शैतान और उसके लोग आपको परेशान कर सकते हैं, यहां तक कि आपकी हत्या कर सकते हैं, परन्तु आपको मालूम है कि आपको महिमा वाला एक घर मिला है। यदि आपका नाम उस पुस्तक में *नहीं* है तो आप अधिक से अधिक सुख विलास के कुछ दिन बिताकर अनन्तकाल के लिए पीड़ा और क्लेश में रहने की आशा कर सकते हैं। यदि मुझे निश्चय न होता कि मेरा नाम वहां है, तो मैं हिचकिचाता नहीं। मैं अपने प्राण की आवश्यकता के लिए अवश्य भाग दौड़ करता।[50] ''जा, तू भी ऐसा ही कर'' (लूका 10:37ख)।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

पाठ में एक-एक आयत पर जाने के बजाय मैंने वचन में से मुख्य शिक्षाओं पर ध्यान दिलाया है। ऐसा मैंने दो कारणों से किया है। पहला, प्रकाशितवाक्य 13:1-10 उन पदों में से है, जिनमें विस्तार से चर्चा करते हुए हम इतना खो सकते हैं कि हमें यह ध्यान ही न रहे कि उन में सिखाया क्या गया है। मैंने कई मुख्य बातों पर बल देते हुए इससे बचने का प्रयास किया है। दूसरा, मुझे हमेशा एक ही बात करना अच्छा नहीं लगता; मुझे एक ही बात करते रहना अच्छा नहीं लगता; मुझे विविधता पसन्द है। यदि आप एक-एक आयत पर चर्चा करना चाहें तो आपको वारेन वियर्सबे के विभाजन पसन्द आ सकते हैं: (1) अचम्भा (आयत 3); (2) पूजा (आयत 4); (3) बातें (आयतें 5, 6); (4) युद्ध (आयतें 7-10)।[51] चार्ल्स

रायरी ने इन मुख्य शब्दों का इस्तेमाल किया है: (1) दर्शन (आयतें 1, 2); (2) अभिनंदन (आयतें 3, 4); (3) गतिविधि (आयतें 5-7क); (4) अधिकार (आयतें 7ख-10)।[52]

कक्षा में पढ़ाते हुए यूहन्ना के समय के मसीही लोगों के लिए अध्याय 13 के अर्थ और आज के लिए इसके महत्व की समीक्षा करते हुए मैं चार्ट इस्तेमाल करता हूं। आप इस पाठ के अन्त में दिए (या इसके जैसे) चार्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं और फिर अगले पाठ के साथ इसे जारी रख सकते हैं।

सिखाते समय आप यदि दर्शनों के रेखाचित्र बनाना चाहें तो नीचे दिया गया रेखाचित्र आपको पसन्द आ सकता है। इसे सिडनी और ऑस्ट्रेलिया में मेक्वेरी स्कूल ऑफ़ प्रीचिंग में मेरे एक पूर्व छात्र ने बनाया था। ध्यान दें कि उसके पशु के सात सिर हैं, परन्तु मुंह केवल एक (13:2, 5, 6; 16:13)।

जॉन स्टेसी ने अध्याय 13 पर अपने पाठ को ''द इविल ट्रिनिटी'' नाम दिया है। डी. टी. नाइस ''शैतान की युद्ध योजना'' शीर्षक पसन्द करते हैं। इस अध्याय के अन्य सम्भावित शीर्षक ''शैतान के साथी'' ''शैतान के दायें हाथ'' और ''शैतान के सहायक'' हो सकते हैं।

दो पशु **(अजगर के सहयोगी)**			
सहयोगी	*प्रभाव डालने के उनके ढंग*	*यूहन्ना के समय में विशेष महत्व*	*किसी भी युग में प्रासंगिकता*
पहला पशु: समुद्र का पशु ''पशु''	शक्ति और दबाव (''मसीही-विरोधी राजनैतिक शक्ति'')	रोमी साम्राज्य सम्राट की प्रधानता में	धमकी: सताव दबाव
दूसरा पशु: पृथ्वी का पशु ''झूठा भविष्यवक्ता''	झूठी शिक्षा और धोखेबाजी (''मसीही-विरोधी धर्म'')	कौंसिलिया: राजा की पूजा लागू करवाने वाली शाखा	छल: झूठी शिक्षा और फिलॉसफियां

''नीरो रेडिविवुस'' मिथ्या

68 ईस्वी में नीरो की मृत्यु के पश्चात, उसकी राजकीय अन्त्येष्टि की गई, परन्तु कई लोगों ने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह मर चुका है[53]। यह बात फैल गई कि वह पार्थियों में चला गया है और शीघ्र ही रोम को नष्ट करने के लिए पार्थी सेना का मुखिया बनकर लौट आएगा। कुछ लोगों का मानना था कि वह मुर्दों में से जी उठेगा। रोमी इतिहासकार टेसिटुस ने लिखा है कि तीन छलियों ने अपने आप को नीरो होने का दावा किया था।

यह मिथक केवल कुछ यहूदियों तक ही सीमित था, जिन्हें यह सोचना अच्छा लगता था कि नीरो यरूशलेम के पतन के लिए रोम को दण्ड देने वापस आएगा। आरम्भिक मसीही लेखक क्रिसोस्टोम इस मिथ्या को जानता था और इसका मज़ाक उड़ाता था।

इस मिथ्या से प्रकाशितवाक्य का रूपक प्रभावित हुआ या नहीं, परन्तु यूहन्ना ने मूर्ति पूजक मिथ्या को सत्य नहीं माना होगा। शायद संकेतवाद का अर्थ यही था कि नीरो की सताने वाली नीति को किसी और मुखिया या सम्राट द्वारा फिर से शुरू किया जाएगा, जैसा कि डोमिशियन के समय में हुआ। इस कारण एक और आरम्भिक मसीही लेखक टरटुलियन ने लिखा है, ''अपने इतिहास से पूछो; तुम्हें पता चल जाएगा कि मसीही पथ पर सरकारी तलवार चलाने वाला सबसे पहला व्यक्ति नीरो ही था। ... डोमिशियन ने भी नीरो की तरह ही सताव की कोशिश की थी'' (*अपोलोजी* 5)।

टिप्पणियां

[1]''तीन R'' में reading, writing and arithmetic अर्थात पढ़ना, लिखना और गणित (मज़ाक में इन्हें ''reading, 'riting and 'rithmetic'' कहते हैं) के मूल कौशल में सम्मिलित हैं। [2]उत्पत्ति 3 में उसने अपने उद्देश्य एक सांप के द्वारा पूरे किए; प्रकाशितवाक्य 13 में उसने मनुष्यों के द्वारा काम किया। [3]कुछ हस्तलिपियों में ''मैं'' है (देखें KJV), परन्तु हस्तलिपि का प्रमाण ''वह'' के समर्थन में है। इसलिए कुछ आधुनिक अनुवाद इस वाक्य को अध्याय 12 के अन्त में रखते हैं। कुछ तो इसे अध्याय 12 की आयत 18 बना देते हैं। अजगर को अपने साथी की प्रतीक्षा करते (शायद उसे बुलाते हुए) किनारे पर देखना कुछ अधिक नाटकीय है, परन्तु यह बहस उन विवरणों में से एक है, जिनके परिणाम का इतना महत्व नहीं। [4]मायर पर्लमैन, *विंडोज़ इन टू द फ्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (स्प्रिंगफील्ड, मिज़ोरी: द गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941), 111. इस विवरण की तुलना दानिय्येल 7:2 वाले ''महासागर'' से करें। [5]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' में ''अथाह कुण्ड'' पर टिप्पणियां देखें। [6]मेरी शैली के प्रसिद्ध साइंस फिक्शन/हॉरर नावल *फ्रैंकेंस्टेन* (1818) में डॉ. फ्रैंकेंस्टेन ने मनुष्य जैसा कोई चित्र बनाया, जिसे उसने मृत देहों के अंगों से बनाया था। [7]हम आराम से यह मान सकते हैं कि सिंह पशु, भालू पशु और दानिय्येल वाले खतरनाक पशु का एक-एक सिर था। [8]दानिय्येल वाले चार पशुओं के *कुल* सात सिर थे। [9]पिछली पुस्तक में हमने निष्कर्ष निकाला था कि समुद्री पशु ''मसीह विरोधी'' *नहीं* था। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में '''मसीह विरोधी' और प्रकाशितवाक्य'' पर पाठ देखें।) इस पाठ में हम यह ध्यान देते हैं कि वह क्या था और क्या *है*। [10]समय और स्थान मुझे दानिय्येल

7 वाले दर्शन पर विस्तार से बात करने की अनुमति नहीं देते, परन्तु यहां पर कुछ नोट्स सहायक हो सकते हैं: (1) सिंह पशु के विवरणों के सम्बन्ध में देखें दानिय्येल 4:33-36. (2) भालू पशु ''एक पांजर के बल उठा'' (दानिय्येल 7:5) था क्योंकि साम्राज्य का एक भाग (फारसी भाग) प्रबल था। (3) चीता पशु के चार सिर थे क्योंकि सिकंदर महान के मरने के बाद साम्राज्य चार भागों में बंट गया था।

[11]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में पृष्ठ 97 पर ''राज्य/कलीसिया की स्थापना'' पर अतिरिक्त लेख देखें। ''आर.एच.चाल्स ने कहा कि आरम्भिक मसीही लूका 21:20 में यीशु की भाषा और [परमेश्वर की प्रेरणा रहित] बरनाबास की पत्री के उद्धरण देकर रोम को दानिय्येल वाला चौथा राज्य मानते थे'' (ह्यूगो मेकोर्ड, *द रॉयल रूट ऑफ़ रैवलेशन* [नैशविल्ले: ट्वंटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन, 1976], 39)। मौखिक प्रेरणा को न मानने वालों का यह विश्वास है कि दानिय्येल ने किसी ऐसे साम्राज्य की भविष्यवाणी की होगी जो पहले से अस्तित्व में नहीं था, जिस कारण वे रोमी साम्राज्य के चौथा राज्य होने से इनकार करते हैं। जो यह मानते हैं कि परमेश्वर ने ही बाइबल को लिखवाया, उन्हें यह विश्वास करने में कोई समस्या नहीं है। [12]एडी क्लोर, अनपब्लिशड लैक्चर नोट्स ऑन रैवलेशन, तिथि नहीं। [13]जेम्स एम.एफर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 89. [14]अल्बर्ट एच.बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेज फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 67. रोमी साम्राज्य के इतिहास की समीक्षा के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 56 से 60 देखें। [15]कुछ टीकाकारों का विचार है कि नये नियम के लेखकों का रोमी साम्राज्य के प्रति ''हृदय परिवर्तन हुआ था।'' उनका कहना है कि आारम्भिक लेखक रोमी सरकार का आदर करना सिखाते थे (रोमियों 13:1-7; 1 तीमुथियुस 2:1, 2; 1 पतरस 2:13-17), परन्तु रोमियों द्वारा सताव आरम्भ करने पर उनके ''मन बदल गए।'' बाइबल में इस काल्पनिक ''हृदय परिवर्तन'' का कोई प्रमाण नहीं है। आरम्भ से अन्त तक नया नियम अधिकार वालों का सम्मान करना ही सिखाता है (उदाहरण के लिए देखें रोमियों 13)। इसके साथ ही यह सिखाता है कि विवाद होने पर हमें ''मनुष्यों से बढ़कर परमेश्वर की ही बात माननी'' चाहिए (प्रेरितों 5:29)। [16]11:7 पर चर्चा करते हुए (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' के पाठ ''क्या आप मरने को तैयार हैं?'' में देखें), हमने देखा था कि वर्तमानकाल का इस्तेमाल यह संकेत देते हुए कि पशु अथाह कुण्ड में से *निरन्तर* बाहर आता जा रहा है, विवरणात्मक वाक्यांश ''अथाह कुण्ड में से ऊपर आता पशु'' में किया था। इससे यह संकेत मिलता है कि चाहे पशु का वर्तमान प्रदर्शन था (रोमी साम्राज्य), परन्तु इससे भी अधिक बात थी। वर्तमानकाल का इस्तेमाल 13:1 में भी हुआ है, जहां पशु को ''समुद्र में से निकलते हुए'' दिखाया गया है। शैतान हमेशा इस बात को सुनिश्चित करेगा कि कुछ शक्ति कलीसिया का विरोध करने में लगी रहे। [17]अजगर के *सात* मुकुट हैं, क्योंकि वे उसके सात सिरों पर हैं (12:3); पशु के *दस* मुकुट हैं क्योंकि वे उसके दस सींगों पर हैं (13:1)। मुकुटों की इस स्थिति को बदलने का महत्व हो भी सकता है और नहीं भी। कइयों ने शैतान के सिर पर मुकुटों की व्याख्या वास्तविक अधिकार के संकेत के रूप में की है, जबकि पशु के सींगों पर मुकुट लिए गए अधिकार का संकेत देते हैं। [18]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्या, 3'' के पाठ ''अपने शत्रु को जानें'' में इन विशेषताओं पर नोट्स देखें। अध्याय 17 में पशु के सिरों और सींगों को अतिरिक्त सांकेतिक महत्व दिया गया है; परन्तु अध्याय 13 में अजगर की समानता पर ज़ोर दिया गया है। इस पुस्तक में ''व्याख्या, अनुमान और आत्मज्ञान'' पाठ में सिरों और सींगों पर चर्चा देखें। [19]KJV में ''seat'' है, परन्तु यहां यूनानी शब्द thronos का रूप है। परगुमम में ''शैतान का सिंहासन'' का उल्लेख 2:13 में था। इससे यह संकेत मिल सकता है कि उस नगर में शैतान का प्रभाव कई तरह से दिखाई दे रहा था। 13:2 में ''सिंहासन'' शब्द का इस्तेमाल सामान्य रूप में पूरे पाप भरे संसार में शैतान के शासन की बात करते हुए व्यापक ढंग से किया गया है। [20]''सामर्थ,'' ''सिंहासन'' और ''अधिकार'' का बड़ा निकट सम्बन्ध है। इस मेल का इस्तेमाल यह कहकर ज़ोर देने के लिए किया गया है कि अजगर ने ''पशु का अपना अधिकार दे दिया'' (आयत 4)।

[21]सामान्य की तरह, चार बार बताने का अर्थ ''हर एक'' है। KJV में केवल तीन बार बताया गया है परन्तु हस्तलिपि के प्रमाण के साथ-साथ प्रकाशितवाक्य चार बार बताने का समर्थन करता है। [22]चीते का निकट सम्बन्धी तेन्दुआ चार पांवों वाले सबसे तेज़ पशुओं में प्रसिद्ध है। [23]यूनानी शब्द के अनुवाद ''पशु'' का

अर्थ है ''जंगली पशु।'' [24]आयत 3 कहती है कि ''उसके सिरों में से एक पर घाव'' लगा था, परन्तु आयतें 12 और 14 कहती हैं कि पशु ही घायल हुआ था। इसलिए हम घाव पशु के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। [25]हस्तलिपि का प्रमाण इस बात में विभाजित हो जाता है कि यह ''सिरों'' (बहुवचन) होना चाहिए या ''सिर'' (एक वचन)। NIV में ''और प्रत्येक सिर पर परमेश्वर की निन्दा करने वाला नाम'' देकर इस दुविधा को सुलझाने का प्रयास किया गया है। [26]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो.संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 89. आगे यह संकेत देते हुए कि रोमी साम्राज्य के लोगों ने सम्राटों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले परमेश्वर की निन्दा करने वाले पद स्वीकार किए, पशु को ''निन्दा के नामों से *भरा हुआ* '' कहा गया है (17:3)। [27]''अर्थात'' अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। कुछ अनुवादक इसके बजाय यहां ''और'' शब्द जोड़ते हैं। [28]आयत 6 में अनुवादित शब्द ''रहने वालों'' उसी मूल शब्द से है, जिससे अनुवादित शब्द ''तम्बू।'' देखें NIV. [29]बेशक यह संभव है कि ''तम्बू'' और ''स्वर्ग के रहने वाले'' स्वर्ग और वहां पहले जा चुके मसीही लोगों के लिए है (शायद जो शहीद हो गए थे)। [30]''पवित्र लोगों'' का अर्थ है ''पवित्र किए हुए।'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''मेमना योग्य है'' में टिप्पणी 30 देखें।

[31]आरम्भिक मसीही लोगों के सताव के कुछ उदाहरण देने के लिए आप यहां पर रुक सकते हैं। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-6'' के पाठ ''आगे भी जारी'' में देखें। [32]हमें धमकाने की कोशिश करने के लिए शैतान द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले ऐसे अतिरिक्त उदाहरण दें, जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों। यदि इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास के लिए किया जाता है तो उदाहरणों के लिए आप अपने छात्रों का नाम पूछ सकते हैं। [33]विशेषतया हम सम्राट की पूजा पर चर्चा करेंगे, जिसकी मांग विशेष डोमिशियन ने की थी। [34]बार्कले, 94. [35]वचन में इस विशेषता का उल्लेख कई बार आया है (13:12, 14); स्पष्टतया लोग इसे पशु के बारे में सबसे अद्‌भुत बातों में से एक मानते थे। [36]इस पुस्तक में अतिरिक्त लेख '''नीरो रेडिविवुस' मिथ्या'' देखें। [37] *अपोलॉजी* 5. *रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 109 में जे.डब्ल्यू.रॉबटर्स द्वारा उद्धृत। [38]यह तर्क दिया जा सकता है कि ''अनुमति दी है'' का अर्थ अजगर द्वारा पशु को अधिकार देने को कहा गया है (13:2, 4 की तरह), परन्तु इन विचारों पर ध्यान दें : (1) प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में इस फॉर्मूले का इस्तेमाल परमेश्वर के कार्य का संकेत देने के लिए किया गया है। (2) अजगर जो भी करता है वह उसे करने की परमेश्वर की *अनुमति* से ही है। ''कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो, ...'' (रोमियों 13:1ख)। [39]एक जटिलता यह है कि मूल शास्त्र में कुछ अस्पष्टता है, जिससे कई अनुवाद हो जाते हैं। [40]''... परमेश्वर के आदेश से बचा नहीं जा सकता'' (बार्कले, 97)।

[41]''विरोधी को मार डालना अपनी समस्याओं को सुलझाने का समुद्र के पशु का तरीका है। हमारा नहीं'' (यूजीन एच.पीटरसन, *रिवसर्ड थंडर* [सेन फ्रांसिस्को: हार्परकोलिंस पब्लिशर्स, 1988], 125)। [42]एम.राबर्ट मुल्होलैंड जूनि. *होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एसबरी प्रैस कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 227. [43]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''गरजती टापें'' में 6:4 पर नोट्स देखें। आप इस पुस्तक के पाठ ''कटनी का समय!'' में टिप्पणी 22 में दिए तलवार के विवरण की समीक्षा कर सकते हैं। [44]टी.एफ.ग्लेसन *द रैवलेशन ऑफ जॉन,* द कैम्ब्रिज बाइबल कमैंट्री ऑन द न्यू इंग्लिश बाइबल सीरीज़ (कैम्ब्रिज, इंग्लैंड : कैम्ब्रिज, यूनिवर्सिटी प्रैस, 1965), 81. [45]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''कलीसिया जो अतीत में जी रही थी'' पाठ देखें। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जीवन की पुस्तक के अन्य हवाले 17:8; 20:12; और 21:27 में मिलता है। [46]मूल शास्त्र में वाक्यांश ''मेमना जो वध किया गया था'' के बाद, वाक्य के अन्त में यह वाक्यांश मिलता है (देखें KJV और NIV)। NASB के अनुवादकों ने ''everyone ... written'' के बाद इस वाक्यांश को रखा, क्योंकि 17:8 में इससे जुड़े पद में वाक्यांश का संकेत उनके लिए है, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं हैं। परन्तु दोनों पदों को समानान्तर बनाना अनावश्यक है। [47]ओवन एल.क्राउच, *एक्सपोज़िटरी प्रीचिंग एंड टीचिंग: रैवलेशन* (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1985), 237.

[48]आयत 8 का इस्तेमाल प्रीडेस्टिनेशन (यह विचार कि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाने से पहले ही यह तय कर लिया था कि किस का उद्धार करना है और किस का नाश करना है) को प्रमाणित करने के लिए किया जाता है। बाइबल यह तो सिखाती है कि (1) परमेश्वर को यह अधिकार है कि किसका उद्धार करना है और किसका नहीं और (2) परमेश्वर ने पहले से ठहराया है कि किस प्रकार के व्यक्ति (आज्ञाकारी विश्वासी) का उद्धार करना है और किस प्रकार के व्यक्ति (अविश्वासी) का नाश करना है। इससे आगे जाना और यह सिखाना कि यह तय करने में कि उद्धार पाने या नाश होने में मनुष्य का हाथ नहीं है, बाइबल को ही स्व-विरोधी बनाना है। बाइबल (प्रकाशितवाक्य सहित) सिखाती है कि अन्त में निर्णय हर व्यक्ति को लेना है कि वह यीशु के पीछे चले या नहीं। [49]दोनों वर्गों को व्यक्त करने का एक और ढंग 13:6, 8 में मिल सकता है: स्वर्ग के रहने वाले हैं (13:6) और पृथ्वी के रहने वाले हैं (13:8)। [50]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो लोगों को बताएं कि अपने नाम जीवन की पुस्तक में सुनिश्चित करने के लिए क्या करना आवश्यक है। यदि उन्होंने बपतिस्मा नहीं लिया है, तो उन्हें प्रेरितों 2 याद दिलाएं, जहां विश्वास करने वालों ने बपतिस्मा लिया था और प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लिया था (आयतें 38, 41, 47)। कलीसिया उद्धार पाए हुए लोगों की मण्डली है, इसलिए उनमें मिलाए जाने वाले लोग वही हैं, जिनका नाम उद्धार पाए हुओं की सूची में है। यदि आपके सुनने वालों में से किसी ने बपतिस्मा लिया हो परन्तु अब अविश्वासी हों तो उन्हें याद दिलाएं कि जीवन की पुस्तक से नाम काटा भी जा सकता है (प्रकाशितवाक्य 3:5; निर्गमन 32:32) और प्रभु में वापस आने के लिए प्रोत्साहित करें (प्रेरितों 8:22, 23; याकूब 5:16)।

[51]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 605. [52]चार्ल्स कैल्डवैल रायरी, *रैवलेशन* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1968), 82-84. [53]कुछ लोगों का मानना था कि नीरो मरा नहीं था। अन्य का विश्वास था कि वह मुर्दों में से जी उठेगा।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. अध्याय 13 का मुख्य उद्देश्य क्या है?
2. पाठ कहता है कि परमेश्वर ने मसीही लोगों को अपने विश्वास में बने रहने के लिए प्रत्येक पशु के परिचय के बाद विशेष टिप्पणी जोड़ी है। उन आयतों को पहचानने का प्रयास करें, जिनमें दो टिप्पणियां मिलती हैं।
3. पाठ में दावा किया गया है कि शैतान अपने लोगों के द्वारा काम करता है। क्या आप उन मानवीय माध्यमों के उदाहरण दे सकते हैं, जिनके द्वारा शैतान आज काम करता है।
4. दानिय्येल 7 अध्याय वाले चार पशुओं पर चर्चा करें और बताएं कि प्रकाशितवाक्य 13 में दिखाए गए समुद्र से निकलने वाले पशु से उनका क्या सम्बन्ध है।
5. पाठ में सुझाव है कि यूहन्ना के समय में समुद्र से निकलने वाला पशु रोमी साम्राज्य था। वह साम्राज्य किस प्रकार समुद्र से निकलने वाले पशु का विवरण है (उदाहरण के लिए, सामर्थ, प्रभाव या परमेश्वर की निन्दा) से मेल खाता ?
6. पाठ में यह भी सुझाव है कि समुद्र से निकलने वाला पशु धमकी के द्वारा सच्ची मसीहियत को रोकने के प्रयास का *कोई* भी बल हो सकता है। क्या शैतान आज भी अपने काम को बढ़ाने के लिए धमकी का इस्तेमाल कर रहा है?
7. उस नश्वर घाव पर जो ठीक हो गया था और उसके सम्भावित अर्थों पर भी चर्चा करें।

8. क्या ''सारी पृथ्वी'' समुद्र से निकलने वाले पशु के पीछे चलती है ? क्या भीड़ के उलट चलना कठिन है ?
9. वचन में किन सुझावों से संकेत मिलता है कि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में ही है और उसने समुद्र से निकलने वाले पशु के कार्यों को सीमित किया था।
10. 13:10 के पहले वाक्य (''जो ... अवश्य है कि वह ... मारा जाएगा'') के सम्बन्ध में पाठ में तीन सम्भावित अर्थ बताए गए थे। आप किसे प्राथमिकता देंगे ?
11. 13:10 के अन्त में ''धीरज'' और ''विश्वास'' का उल्लेख है। शैतान का सामना करने के लिए ये गुण कितने आवश्यक हैं ?
12. जीवन की पुस्तक क्या है ? क्या उस पुस्तक में नाम लिखा जाना आवश्यक है ?

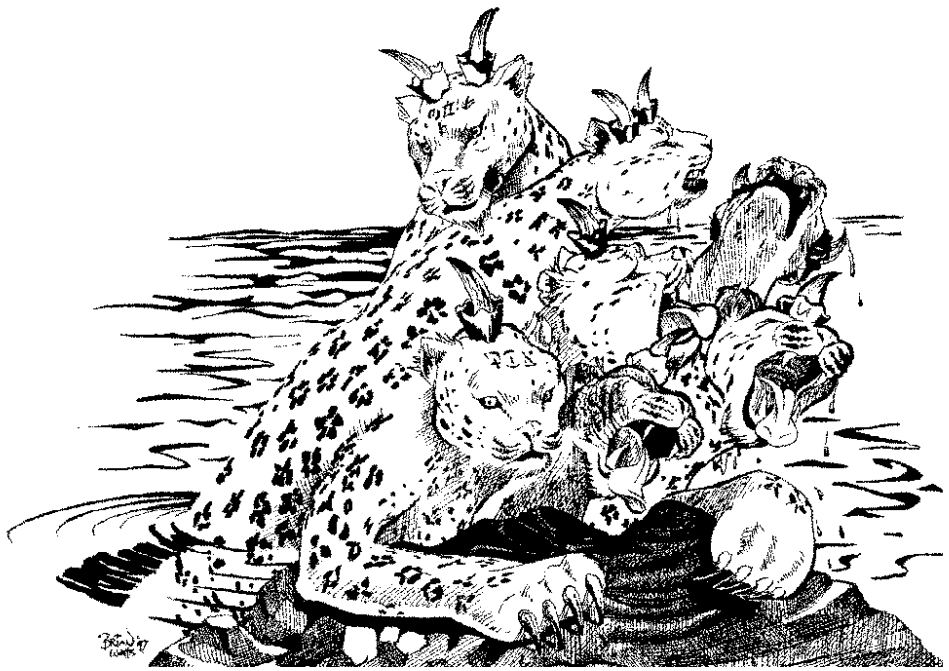

समुद्र में से निकला पशु (13:1, 2)